ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 45-54**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

भारतीय राजनीति में परिवारवादः एक विश्लेषण

डॉ0 शैलेन्द्र श्रीवास्तव
सहायक आचार्य– स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, सी.एम. (आर्ट्स एण्ड कॉमर्स) कॉलेज,किलाघाट, (अंगीभूत इकाई ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा (बिहार), भारत

Received-05.01.2026, Revised-12.01.2026, Accepted-18.01.2026 **E-mail:dr-ssrivastava660@gmail.com**

सारांशः ***नव–उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के काल में भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा विभिन्न क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गई है। परिवारवाद अथवा वंशवाद शब्द को कुल, खानदान, वंश तथा भाई–भतीजावाद आदि का पर्याय माना जाता है, जिसका अर्थ है कि "वह प्रथा जिसके अन्तर्गत राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक नेतृत्व मुख्यतः एक ही परिवार के भीतर केंद्रित हो जाता है और योग्यता, क्षमता, चरित्र तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को दरकिनार कर दिया जाता है"। यद्यपि राजनीति में परिवारवाद सदियों से भारतीय समाज का हिस्सा रही है, लेकिन 21वीं सदी में "भारतीय राजनीति में पारिवारवाद" समाज सेवा के आवरण में आय का स्रोत तथा स्टेटस सिंबल बनकर उभरी है। 15 अगस्त,1947 की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही राजनीति में परिवारवाद, जिसकी समय–समय पर समीक्षा होती रही है, ने भारत के राजनीतिक इतिहास को एक आकार भी दिया है तथा वर्तमान परिदृश्य को प्रभावित भी कर रही है।***

अतः इस शोध पत्र के माध्यम से भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की राजनीति में परिवारवाद का उद्भव, ऐतिहासिक विकास, इसमें शामिल प्रमुख राजनीतिक परिवारों तथा भारत की राजनीतिक संस्कृति को आकार देने में इसकी भूमिका का विश्लेषण करना है। इसी कारण से "भारतीय राजनीति में परिवारवादः एक विश्लेषण" 21वीं सदी में भी अत्यंत समसामयिक एवं प्रासंगिक हो गया है।

कुंजीभूत शब्द– परिवर्तित प्रवृत्ति, सशक्तिकरण, निर्बल सामाजिक इकाई, व्यक्तित्व विकास, राष्ट्रीय विकास, क्रांतिकारी।

शोध पत्र के मुख्य बिंदु– 1. भारतीय एवं पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में राजनीति में परिवारवाद, 2. भारतीय राजनीति में परिवारवाद का ऐतिहासिक विकास, 3. प्रमुख राजनीतिक दलों की राजनीति में परिवारवाद का उद्भव, 4. 21वीं सदी में भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति पर परिवारवाद के निहितार्थ एवं प्रभाव, 5. समकालीन भारतीय राजनीतिक दलः परिवारवाद से ओत–प्रोत, 6. निष्कर्ष।

1. **भारतीय एवं पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में राजनीति में परिवारवाद–** भारत में ही नहीं अपितु विश्व के सम्पूर्ण देशों में परिवारवाद को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन की जीवनदायिनी, प्राथमिक तथा केंद्रीकृत इकाई माना जाता है। इसी कारण भारतीय एवं पाश्चात्य राजनीतिक चिंतकों ने परिवारवाद को भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित करने का प्रयास किया है। भारतीय चिंतन में परिवारवाद को भारतीय समाज की बुनियाद माना गया है जिसमें व्यक्ति का संबंध न केवल व्यक्तिगत होता है, बल्कि सामूहिक एवं धार्मिक दायित्वों (कर्तव्य बोध) से भी ओत–प्रोत होता है। हिंदू धर्म दर्शन में परिवारवाद का विशेष महत्व है, जिसमें परंपराओं, रीति–रिवाजों, अनुष्ठानों तथा सामाजिक बंधनों आदि को बनाए रखना परिवार के सभी सदस्यों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मानी जाती है। इसीलिए भारतीय समाज में संयुक्त परिवार सामान्य रूप से देखने को मिलती रही है, जिसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य की भूमिका, सामूहिक एवं व्यक्तिगत उत्तरदायित्व स्पष्ट रूप से पृथक–पृथक होती हैं।

पश्चिमी देशों में, पाश्चात्य राजनीतिक चिंतक, विशेष रूप से पुनर्जागरण तथा समाजवादी विचारधाराओं के प्रभाव के कारण, परिवारवाद की अवधारणा को व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अधिकारों एवं स्वायत्त आदि पर विशेष बल देने के साथ ही राज्य के हस्तक्षेप को कम करने के रूप में वर्णित किया गया है। इसी कारण से, हॉब्स, लॉक एवं रूसो जैसे पश्चिमी दार्शनिकों ने परिवारवाद को सामाजिक अनुबंध का एक हिस्सा माना तथा व्यक्तिगत अधिकारों एवं स्वतंत्रता की प्राथमिकता का भी समर्थन किया। पश्चिमी दृष्टिकोण में, परिवारवाद की संरचना सामान्य रूप से एकल परिवार की होती है, जो स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्भरता की अवधारणा को प्रतिबिंबित करती है। इस प्रकार, भारतीय तथा पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन में परिवारवाद की अवधारणा में जमीन–आसमान का अंतर दिखाई पड़ता है। जहाँ भारतीय दृष्टिकोण परिवारवाद की अवधारणा में सामूहिकता एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व पर बल देता है, वहीं पश्चिमी दृष्टिकोण व्यक्तिगत अधिकार तथा स्वतंत्रता को सर्वोच्चतम महत्व प्रदान करता है, यही कारण है कि नव–उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के काल में भी इन दोनों विचारधाराओं का मिला–जुला असर भारतीय राजनीति में परिवारवाद के चलन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता हैः

भारतीय परिप्रेक्ष्यः राजनीति में परिवारवादः 'परिवारवाद' दो शब्दों से मिलकर बना है "परिवार" तथा 'वाद' जहां परिवार (संस्कृत एवं प्राकृत मूल) का अर्थ है घर, परिवार अथवा साथ रहने वाले व्यक्ति जबकि "वाद" (संस्कृतः वद) का अर्थ है विचारधारा, सिद्धांत अथवा व्यवस्था। अर्थात परिवारवाद "परिवार–केंद्रित विचारधारा अथवा व्यवस्था"। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि वैदिक ग्रंथों में परिवारवाद को समाज की मूल इकाई माना गया है। "मनुस्मृति" तथा "महाभारत" जैसे ग्रंथों में कुल तथा वंश परंपरा को बनाए रखने पर जोर दिया गया है। "रामायण" एवं "महाभारत" में परिवारवाद में निष्ठा और उत्तराधिकार प्रणाली के महत्व को दर्शाया गया है, जो परिवारवाद की जड़ों को रेखांकित करती है। मध्यकालीन भारत में मुगल तथा राजपूत शासकों के शासनकाल के दौरान, शाही परिवारों के भीतर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सत्ता का हस्तांतरण राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा पर आधारित था, जिसे आधुनिक संदर्भ में वंशवादी शासन भी कहा जाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण में परिवारवाद उन समाजों से जुड़ा था जहां सामूहिकता एवं पारिवारिक प्रभाव को व्यक्तिगत स्वतंत्रता से बड़ा माना जाता था, राजनीतिक दृष्टिकोण से यह शब्द 20वीं शताब्दी में लोकप्रिय हुआ, विशेषकर राजनीतिक संदर्भों में जब एक विशेष परिवार के लोग पीढ़ियों तक सत्ता में बने रहते हैं। अतः जहां परिवारवाद शब्द की उत्पत्ति संस्कृत एवं प्राचीन भारतीय परंपराओं में हुई है, लेकिन 21वीं सदी में इसका आधुनिक प्रयोग प्रायः सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों आदि में देखा जाता है। इसलिए इस शब्द का प्रयोग पारिवारिक वफादारी के सकारात्मक अर्थ में भी किया जाता है, लेकिन इसे नकारात्मक अर्थ में भी देखा जाता है जब यह राजनीति तथा शासन में अवसरवाद का रूप ले लेता है।

भारतीय समाज में परिवारवाद के अनेकों आयाम हैं। एक ओर जहाँ परिवारवाद पारंपरिक सामाजिक संरचना तथा सामूहिकता को बढ़ावा देता है, तो वहीं दूसरी ओर परिवारवाद को व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं समान अवसर के सिद्धांतों के विरुद्ध भी देखा जाता रहा है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

कभी– कभी ऐसा देखा गया है कि परिवारवाद भारतीय समाज में स्थायित्व एवं समरसता का कारण भी बना है, तो कभी संघर्ष तथा असंतोष का कारण भी। भारतीय दर्शन तथा राजनीतिक चिंतन में, परिवारवाद धर्म (कर्तव्य), कर्म एवं वर्ण (जाति व्यवस्था) जैसी अवधारणाओं के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है, जो हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा अन्य परंपराओं में अंतर्निहित हैं। भारत में परिवारवाद अक्सर पारिवारिक रिश्तों की प्राथमिकता से कहीं आगे बढ़कर परिवार के सम्मान, वंश, कुल, खानदान तथा सामाजिक मानदंडों को बनाए रखने के लिए कर्तव्य की भावना तक फैला हुआ है, जिन्हें सामाजिक स्थिरता के लिए उपयोगी तथा प्रासंगिक माना जाता है। इसलिए राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा के संबंध में ज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद), उपनिषद (बृहदारण्यक उपनिषद, छांदोग्य उपनिषद, कथा उपनिषद एवं मुंडक उपनिषद), भगवद गीता, रामायण, महाभारत, पुराण (विष्णु पुराण, शिव पुराण, भागवत पुराण, ब्रह्म पुराण तथा मार्कंडेय पुराण), धर्मशास्त्र (मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, वशिष्ठ स्मृति एवं अध्वर्य स्मृति) और तंत्र ग्रंथ (कालिका पुराण तथा कालचक्र तंत्र) आदि है। भारतीय धार्मिक ग्रंथों में परिवारवाद (परिवार के महत्व) को विभिन्न श्लोकों तथा कथाओं के माध्यम से समझाया गया है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत एवं भगवद गीता में परिवार की भूमिका, पारिवारिक कर्तव्यों तथा समाज में इसके प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

जहां वेदों में परिवारवाद (ऋग्वेद 3.62.10) संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। भावार्थः हम सब एक साथ चलें, एक साथ विचार करें तथा हमारे मन एक समान हों। व्याख्याः यह श्लोक पारिवारिक एकता एवं सामूहिक निर्णय लेने की महत्ता को दर्शाता है। उपनिषदों में परिवारवाद (तैत्तिरीयोपनिषद 1.11.2) मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथि देवो भव। भावार्थः माता, पिता, गुरु एवं अतिथि को देवता के समान मानें। व्याख्याः यह श्लोक पारिवारिक मूल्यों, माता–पिता तथा गुरु के प्रति सम्मान को दर्शाता है, जो परिवारवाद की बुनियाद रखते हैं। भगवद गीता में परिवारवाद (श्रीमद्भगवद्गीता (1.40) कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।। भावार्थः जब कुल (परिवार) नष्ट होता है, तो कुल के धर्म (संस्कार) भी नष्ट हो जाते हैं तथा अधर्म बढ़ जाता है। व्याख्याः यह श्लोक परिवार के पतन से समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को बताता है। कुलधर्म (पारिवारिक कर्तव्य) के विनाश से समाज में अव्यवस्था फैलती है। रामायण में परिवारवाद पितृवचन परिपाल पलानन धर्मस्य परम पद्मम् भावार्थः पिता के वचनों का पालन करना धर्म का परम स्थान है। व्याख्याः रामायण में श्रीराम का वनवास जाना पारिवारिक आदर्शों का श्रेष्ठ उदाहरण है। उन्होंने पिता दशरथ के वचन की रक्षा के लिए राज्य त्याग दिया। महाभारत में परिवारवाद (महाभारत का अनुशासन पर्व 146.18) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। भावार्थः जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। व्याख्याः यह श्लोक पारिवारिक सुख–समृद्धि में स्त्रियों के सम्मान एवं योगदान को दर्शाता है। भारतीय धर्म ग्रंथों में परिवारवाद को सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक रूप से आवश्यक तथा प्रासंगिक बताया गया है। पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण से ही समाज एवं राष्ट्र का उत्थान संभव है। इन सभी ग्रंथों से हमें भारत में पारिवारिक तथा राजनीति में परिवारवाद की मूल प्रकृति एवं अनुक्रम का पता चलता है जो संस्कृति, धर्म (कर्तव्य) तथा दर्शन आदि के ज्ञान पर आधारित है। राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा मुख्य रूप से हिंदू धर्म ग्रंथों जैसे मनुस्मृति, रामायण तथा महाभारत आदि में पाई जाती है, जहां मनुस्मृति, एक प्राचीन ग्रंथ है, जो भारतीय सामाजिक व्यवस्था को संदर्भित एवं परिभाषित करती है। इसमें समाज की मूल इकाई के रूप में परिवारवाद और वंशवाद की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को महत्व देते हुए परिवार तथा पूर्वजों के प्रति व्यक्ति के कर्तव्य को व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर रखा गया है। यह पारिवारिक विरासत एवं सामाजिक निरन्तरता की उपयोगिता को पुष्ट करता है तथा पितृ भक्ति एवं श्राद्ध (पूर्वजों की उपासना) की अवधारणाओं पर बल देता है, जोकि आज भी भारतीय समाज में धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में परिवार की भूमिका का मुख्य आधार बने हुए हैं।

प्राचीन भारतीय राजनीति में परिवारवाद तथा वंशवाद पर आधारित शासन की परंपरा रही है। उदाहरण के लिए रामायण तथा महाभारत महाकाव्य में राजा तथा उनके परिवार को केंद्रीय स्थान प्राप्त था। जहां रामायण परिवारवाद को एक नैतिक एवं राजनीतिक दोनों ही दुविधाओं (Dilemm̀) को केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया है। व्यक्तिगत स्वार्थ तथा हित की परवाह किए बिना अपने परिवार के प्रति धर्म (कर्तव्य) के सिद्धांत को चरित्र के सम्मान एवं गरिमा के अभिन्न अंग के रूप में चरितार्थ किया गया है। वहीं महाभारत, भव्य राजनीतिक संघर्षों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, परिवारवाद तथा पारिवारिक रिश्तों पर भी बहुत महत्व देता है और कौरवों एवं पांडवों के बीच पारिवारिक झगड़ों तथा पारिवारिक विश्वासघात के परिणामों को दर्शाता है। कौटिल्य (चाणक्य) ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में राजा के कर्तव्यों एवं वंशवाद पर आधारित शासन प्रणाली की व्याख्या की है और लिखा है कि वंशवाद की अपेक्षा योग्यता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, परन्तु इन भारतीय शासकों के लिए भारतीय राजनीति से वंशवाद एवं परिवारवाद के प्रभाव को समाप्त करना कठिन था। इसीलिए संभवतः कौटिल्य ने सुझाव दिया कि राजा को अपने बालकों को शासक बनने के योग्य बनाने के लिए उन्हें उचित शिक्षा तथा प्रशिक्षण देना चाहिए, जिससे राजनीति में परिवारवाद की वंशावली कभी कमजोर न हो। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय चिंतकों ने राजनीति में परिवारवाद अथवा वंशवाद को सत्ता की स्थिरता को साधन के रूप में देखा था।

आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में, स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय राजनीति में परिवारवाद एक जटिल एवं विवादास्पद मुद्दा बन गई है। यही कारण है कि महात्मा गांधी ने कभी भी भारतीय राजनीति में परिवारवाद को सिद्धांतः अथवा व्यवहार में कोई महत्व देने का समर्थन नहीं किया। उनका मानना था कि राजनीतिक सत्ता तथा नेतृत्व केवल परिवार अथवा वंश से जुड़ा नहीं होना चाहिए, अपितु देश के लिए सेवा और संघर्ष पर आधारित होना चाहिए। महात्मा गांधी ने नैतिक शासन के संदर्भ में पारिवारिक मूल्यों को बढ़ावा दिया। स्वराज की अवधारणा केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के बारे में नहीं थी, बल्कि बड़े सामाजिक ताने–बाने के भीतर सद्भाव में रहने वाले व्यक्तियों तथा राजनीति में परिवारवाद के बारे में भी थी। साथ ही डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर ने भारतीय समाज में जातिवाद तथा परिवारवाद के प्रभुत्व को चुनौती देते हुए कहा कि भारतीय राजनीति में परिवारवाद तथा वंशवाद समाज को विभाजित करता है जिसके कारण समाज के कमजोर वर्गों को उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाता है। उन्होंने भारतीय समाज से जातिवाद तथा राजनीति में परिवारवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की बात कही।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 'भारतीय राजनीति में परिवारवाद' एक जटिल एवं विकासशील पहलू रहा है। जहाँ प्राचीन भारतीय राजनीति में परिवारवाद को सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का एक अंश माना जाता था, वहीं समकालीन भारतीय राजनीति में परिवारवाद एक चुनौती के रूप में उभरा है, जिसे न केवल सामाजिक एवं सांस्कृतिक बल्कि राजनीतिक दृष्टिकोण से भी देखा जा रहा है।

पश्चात परिप्रेक्ष्यः राजनीति में परिवारवादः परिवारवाद अंग्रेज़ी शब्द Familism (फ़ैमिलिज़्म) का हिंदी अनुवाद है, फ़ैमिलिज़्म शब्द 'लैटिन भाषा "फ़ैमिलिया" (Familia) शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है "परिवार" अथवा "घर"। अर्थात फ़ैमिलिज़्म से तात्पर्य किसी

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

विश्वास प्रणाली, रीति–रिवाज अथवा सामाजिक विचारधारा से है। "फ़ैमिलिज़्म" शब्द 19वीं सदी के अंत तथा 20वीं सदी के पूर्वार्ध में समाजशास्त्रीय एवं मानवशास्त्रीय विचार–विमर्श में उभरा, जिसका उद्देश्य उन संस्कृतियों का वर्णन करना था जो व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा पारिवारिक निष्ठा, एकता तथा सामूहिक कल्याण को प्राथमिकता देते थे। इसका उपयोग उन सामाजिक संरचनाओं का वर्णन करने के लिए किया गया था जिसमें पारिवारिक बंधन निर्णय लेने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से दक्षिणी यूरोपीय, लैटिन अमेरिकी एवं एशियाई समाजों में। समाजशास्त्र में प्रारंभिक प्रयोग (1940–1950) समाजशास्त्री टैल्कॉट पार्सन्स ने पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं के एक भाग के रूप में परिवारवाद पर चर्चा की तथा इसकी तुलना आधुनिक समाज में व्यक्तिवाद से किया। लैटिन अमेरिकी एवं भूमध्यसागरीय संस्कृतियों पर किए गए अध्ययनों ने परिवारवाद को एक सांस्कृतिक विशेषता के रूप में परिभाषित किया है। मनोवैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन (1960 से वर्तमान समय तक) ने अमेरिका में हिस्पैनिक तथा एशियाई आप्रवासी समुदायों का अध्ययन करने वाले शोधकर्ताओं ने परिवारवाद को एक मूल्य प्रणाली के रूप में महत्व दिया जो शिक्षा, कार्य एवं सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है। इस अवधारणा का विस्तार भावनात्मक समर्थन, वित्तीय जिम्मेदारी तथा परिवारों के भीतर अंतर–पीढ़ीगत देखभाल को शामिल करने के लिए किया गया। इस प्रकार, "परिवारवाद" की जड़ें शास्त्रीय लैटिन में हैं, परन्तु 20वीं शताब्दी के दौरान यह समाजशास्त्र तथा सांस्कृतिक अध्ययन में एक मान्यता प्राप्त शब्द बन गया।

पश्चिमी राजनीतिक चिंतकों ने, विशेष रूप से ज्ञानोदय युग के दर्शन में, परिवारवाद के अन्तर्गत व्यक्तिगत अधिकारों एवं स्वायत्तता को अधिक महत्व दिया है, इसलिए परिवारवाद की अवधारणाएं आज भी पश्चिमी राजनीतिक विचारधाराओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। एपिक्यूरियन, सोफिस्ट, सुकरात से लेकर प्लेटो तक ने परिवारवाद पर विस्तार से चर्चा की है। राजनीति विज्ञान के जनक अरस्तू ने अपनी पुस्तक 'पॉलिटिक्स' में परिवारवाद को समाज की स्वाभाविक, मौलिक, प्राकृतिक एवं प्राथमिक इकाई माना है। अरस्तू के अनुसार, समाज के पुनरुत्पादन तथा रखरखाव के लिए परिवारवाद आवश्यक है, परन्तु इसमें न्याय तथा नैतिकता के उच्च गुणों का भी पालन किया जाना चाहिए, जिससे परिवारवाद की अवधारणा एक संतुलित सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था के घटक के रूप में विकसित हो सके तथा परिवार और समाज दोनों में न्याय तथा समानता कायम रह सके। इसके विपरीत, आधुनिक पश्चिमी राजनीतिक चिंतक, विशेषकर उदारवाद से प्रभावित, जैसे कि जॉन लॉक, जीन–जैक्स रूसो एवं इमैनुअल कांट आदि व्यक्तिगत अधिकारों तथा स्वतंत्रता पर ध्यान केंद्रित करते हैं और परिवारवाद की अवधारणा से स्वयं को पृथक रखते हैं। जॉन लॉक के लिए, परिवारवाद मुख्यतः संपत्ति के अधिकार एवं उत्तराधिकार के संदर्भ में महत्वपूर्ण है परन्तु व्यक्तिगत अधिकार, परिवारवाद की तुलना में अधिक उपयोगी एवं प्रासंगिक हैं। रूसो ने भी अपनी पुस्तक 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' में पारिवारिक या व्यक्तिवादी चिंताओं के बजाय सामान्य इच्छा तथा सामूहिक निर्णय लेने के विचारों पर जोर दिया।

कार्ल मार्क्स ने परिवारवाद की अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए लिखा कि पूंजीवाद तथा वर्ग संरचना, जो राजनीति में परिवारवाद को जन्म देती है, विशेष रूप से एकल परिवार, जो पूंजीवादी समाज के लिए बुनियाद तैयार करती है जोकि शक्ति एवं धन के असमान वितरण को बनाए रखने में मदद करती है। कार्ल मार्क्स ने परिवारवाद को पितृसत्तात्मक नियंत्रण के एक उपकरण के रूप में देखा, जहां लैंगिक भूमिकाएं, पारिवारिक कर्तव्य तथा व्यापक आर्थिक असमानताएं व्याप्त हैं। इन आलोचनाओं के बावजूद, कुछ पश्चिमी विचारकों ने नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को आकार देने में परिवारवाद की भूमिका पर जोर दिया है। उदाहरण के लिए, माइकल सैंडेल तथा चार्ल्स टेलर जैसे समकालीन समुदायवादी दार्शनिक सामाजिक संबंधों एवं नैतिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने में परिवारवाद की अवधारणा के महत्व को स्वीकार करते हैं। उनका तर्क है कि व्यक्तिवाद आवश्यक है लेकिन परिवारवाद तथा समुदायवाद भी समान रूप से महत्वपूर्ण, समकालीन एवं प्रासंगिक हैं क्योंकि परिवारवाद की अवधारणा रिश्तों, विश्वासों तथा एकजुटता पर आधारित समाज के निर्माण में उपयोगी है। वहीं दूसरी ओर, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा कि "परिवार नागरिक की प्रथम पाठशाला है। जब कोई बच्चा परिवार में जन्म लेता है, तो वह अपना पहला पाठ माँ के चुंबन एवं पिता के दुलार से सीखता है।"

उपरोक्त तथ्यों के अध्ययन के आधार पर भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों एवं दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित परिवारवाद की अवधारणा का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए कहा जा सकता है कि भारतीय दृष्टिकोण परिवारवाद पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है, क्योंकि यह एक पवित्र, गतिशील तथा स्थायी संस्था है जो सामाजिक व्यवस्था एवं नैतिक कर्तव्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए राजनीति में परिवारवाद न केवल एक व्यक्तिगत अवधारणा है बल्कि एक सामाजिक अवधारणा भी है जो आध्यात्मिक तथा नैतिक जिम्मेदारी के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। इसके विपरीत, उदारवाद का पश्चिमी राजनीतिक दर्शन परिवारवाद की अवधारणा को एक निजी संस्था के रूप में देखता है जो व्यक्तिगत अधिकारों तथा स्वतंत्रता पर केंद्रित है। राजनीति विज्ञान के जनक अरस्तू तथा समुदायवादियों ने भी परिवारवाद की भूमिका को स्वीकार किया है, परन्तु उन्होंने इसे कम महत्व दिया। क्योंकि उन्होंने सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों (Public and private sector) के बीच अंतर पर जोर देकर व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया है। यद्यपि दोनों दृष्टिकोण परिवारवाद को समाज की मूल संरचना के रूप में मान्यता देते हैं, फिर भी व्यक्तिगत अधिकारों एवं पारिवारिक कर्तव्यों को सामाजिक उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही के साथ कैसे संतुलित किया जाए, इस पर दोनों दृष्टिकोणों में काफी भिन्नता हैं। परिवारवाद तथा व्यक्तिवाद के बीच बहस दोनों संदर्भों में प्रासंगिक बनी हुई है, विशेषकर नव–उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के काल में, जो पारिवारिक संरचनाओं तथा राजनीतिक मानदंडों में परिवर्तन के जवाब में विकसित हो रहे हैं।

2. भारतीय राजनीति में परिवारवाद का ऐतिहासिक विकास– प्राचीन सभ्यताओं जैसे सिंधु घाटी सभ्यता तथा अन्य समकालीन सभ्यताओं एवं संस्कृतियों में परिवारवाद एक केंद्रीय सामाजिक संरचना के रूप में इसकी भूमिका और उपयोगिता के इर्द–गिर्द घूमती है। यद्यपि इन प्राचीन सभ्यताओं में "परिवारवाद" एक औपचारिक शब्द के रूप में अस्तित्व में नहीं रहा होगा, फिर भी परिवारवाद की अवधारणा विभिन्न समाजों में सामाजिक संगठन एवं सांस्कृतिक व्यवहार की एक मौलिक इकाई रही है। सिंधु घाटी सभ्यता तथा अन्य प्राचीन सभ्यताओं में परिवारवाद की अवधारणा उनकी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक प्रणालियों में अंतर्निहित थी। वहीं दूसरी तरफ, परिवारवाद की अवधारणा में मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन तथा ग्रीस आदि जैसी प्राचीन सभ्यताओं के सामाजिक जीवन एवं प्रथाओं में कुछ समानताएं और असमानताएं भी थी। जहां प्राचीन मेसोपोटामिया में, परिवारवाद ने समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसमें रिश्तेदारी तथा वंश विरासत सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए महत्वपूर्ण थे। प्राचीन मिस्र में भी परिवारवाद महत्वपूर्ण थी। फिरौन एवं उसके परिवार को भगवान द्वारा नियुक्त शासक माना जाता था, जिससे वंशानुगत शासन राजनीतिक व्यवस्था के लिए उपयोगी और प्रासंगिक बन गया। प्राचीन चीन में, परिवारवाद समाज की मूल इकाई थी तथा कन्फ्यूशीवाद में पितृभक्ति पर जोर दिया

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

जाता था, जहां बेटों से अपने पिता एवं पूर्वजों का सम्मान करने की अपेक्षा की जाती थी। ग्रीस तथा रोम में परिवारवाद की अवधारणा प्राचीन भारत में प्रचलित परिवारवाद की अवधारणा के समान थी, क्योंकि दोनों में परिवारवाद सिर्फ एक घरेलू इकाई नहीं, अपितु सामाजिक शक्ति एवं उत्तराधिकार (विरासत) की भी इकाई थी। इस प्रकार भारतीय राजनीति में परिवारवाद के ऐतिहासिक विकास को देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है–

सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 3300–1300 ईसा पूर्व): विश्व की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में से एक, सिंधु घाटी सभ्यता का समाज अत्यंत संगठित एवं परिष्कृत (वचीपेजपबंजमक) था। सिंधु घाटी में पारिवारिक संरचना की राजनीतिक अवधारणा के बारे में प्रत्यक्ष साक्ष्य तथा लिखित अभिलेखों का अभाव है, परन्तु पुरातात्विक अन्वेषणों से इस समाज में पारिवारिक जीवन तथा राजनीतिक अवधारणाओं की भूमिका के बारे में कुछ जानकारी मिलती है। सिंधु घाटी की बस्तियों (जैसे हड़प्पा और मोहनजोदड़ो) में निजी स्थानों के साथ अच्छी तरह से नियोजित घरों का साक्ष्य मिलता है, जिनका उपयोग संभवतः परिवार के सदस्यों द्वारा किया जाता था, साथ ही आवासों के लेआउट में एकरूपता भी थी, जो यह दर्शाता है कि परिवारवाद की संरचना ने दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी।

सिंधु घाटी स्थलों पर पाए गए मिट्टी के बर्तन, आभूषण, खिलौने तथा औजार जैसी कलाकृतियाँ घरेलू जीवन की ओर इशारा करती हैं जो संभवतः पारिवारवादी इकाइयों के इर्द–गिर्द केंद्रित था। खिलौनों की उपस्थिति बच्चों के पालन–पोषण का संकेत देती है तथा घरेलू वस्तुओं की विविधता यह संकेत देती है कि परिवारवाद घरेलू तथा आर्थिक गतिविधियों के इर्द–गिर्द संगठित थी। सिंधु घाटी में पाए गए चित्र संभवतः देवी–देवताओं या अनुष्ठानिक आकृतियों के चित्रण हैं, जो प्रजनन, मातृत्व एवं पारिवारिक रिश्तों के प्रति समर्पण को दर्शाते हैं। जो समाज की समृद्धि तथा निरंतरता को बनाए रखने में परिवारवाद की अवधारणा के महत्व एवं प्रासंगिकता की सांस्कृतिक समझ को दर्शाता है।

यद्यपि इसके प्रमाण अन्य बाद की सभ्यताओं की तुलना में कम व्यापक हैं, लेकिन परिवारवाद सिंधु घाटी के लोगों के दैनिक जीवन में एक केंद्रीय भूमिका निभाई, जिससे उन्हें बच्चों के पालन–पोषण, संसाधनों के प्रबंधन तथा धार्मिक या सांस्कृतिक प्रथाओं में भाग लेने जैसी जिम्मेदारियों के साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से एकीकृत किया।

वैदिक एवं प्राचीन भारतीय सभ्यता: भारतीय राजनीति में परिवारवाद के ऐतिहासिक कालक्रम में, वैदिक काल (1500–500 ईसा पूर्व) तथा अन्य प्राचीन भारतीय परंपराओं में परिवारवाद की अवधारणा बहुत स्पष्ट हो जाती है। परिवारवाद की संरचना एवं कर्तव्यों का महत्व प्राचीन भारत की धार्मिक, सामाजिक तथा कानूनी प्रणालियों में इस प्रकार निहित पाया जाता है:

1. **वैदिक पारिवारवाद की संरचना:** वैदिक ग्रंथों में परिवारवाद को समाज की आधारशिला के रूप में देखा जाता है। "गृहस्थ" चार आश्रमों (जीवन के चरणों) में से एक है तथा परिवार अनुष्ठानों, सामाजिक दायित्वों एवं व्यक्तियों के आध्यात्मिक जीवन की निरंतरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऋग्वेद में घर को "गृह" तथा "गृहस्थ" के रूप में पूजा जाता है, इसलिए परिवारवाद को समाज की आधारशिला कहा गया है। उस समय की सामाजिक संरचना में परिवारवाद के अंतर्गत एकता, अनुशासन तथा एकजुटता कायम रखी गई थी। अर्थात परिवारवाद की अवधारणा सामाजिक सशक्तिकरण एवं साझा जिम्मेदारी का प्रतीक थी। जोकि इस अवधि के दौरान परिवारवाद को एक सकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में देखा गया।

2. धर्म एवं पारिवारवादी कर्तव्य: वैदिक ग्रंथों में धर्म (कर्तव्य) की अवधारणा तथा परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारी पर बहुत जोर दिया गया है। परिवारवाद की अवधारणा ने पति–पत्नी, माता–पिता एवं बच्चों सहित सभी के लिए स्थिरता एवं सद्भाव बनाए रखने के कर्तव्यों को लागू किया तथा साथ ही धार्मिक अनुष्ठानों, बलिदानों, अगली पीढ़ी को ज्ञान और मूल्यों के हस्तांतरण आदि पर भी महत्व दिया गया है।

3. पितृसत्तात्मक पारिवारवादी संरचना: परिवारवाद की संरचना आम तौर पर पितृसत्तात्मक थी, जिसमें पिता घर का मुखिया होता था। जिसके कारण परिवार के सम्मान की रक्षा, निर्णय लेने तथा बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेदारी उन पर थी जबकि बच्चों की शिक्षा में माताओं की भूमिका को विशेष सम्मान दिया जाता था।

मौर्य तथा गुप्त साम्राज्य (लगभग 322 ई.पू.–550 ई.): मौर्य तथा गुप्त काल में राजवंशीय अथवा राजनीति में परिवारवाद एक केंद्रीय अवधारणा थी। जिसमें राजनीतिक सत्ता तथा सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता ने एक आवश्यक सामाजिक इकाई के रूप में राजनीति में परिवारवाद को जन्म दिया है। इसमें राजनीति तथा रोजमर्रा की जिंदगी दोनों एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है:

1. **राजनीतिक परिवारवाद:** मौर्य साम्राज्य में (विशेषकर अशोक के शासनकाल में), सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक रीति–रिवाजों को बनाए रखने के लिए राजनीति में परिवारवाद ने अहम भूमिका निभाई। विस्तारित राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा शाही दरबारों में भी प्रमुख थी, जहाँ राजाओं, राजकुमारों तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों के बीच संबंधों ने शाही शासन अथवा राजनीति में परिवारवाद को आकार दिया।

2. सामाजिक एवं आर्थिक संगठन: इस अवधि के दौरान राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा ने आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करना जारी रखा तथा पारिवारिक व्यवसाय और पेशे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे। संयुक्त परिवार प्रणाली, जिसमें कई पीढ़ियां एक साथ रहती थीं, अधिक प्रचलित हो गई, जिससे परिवार की संपत्ति तथा सामाजिक स्थिति दोनों की निरंतरता सुनिश्चित हुई।

प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में राजवंशीय राजनीति– राजवंशीय राजनीति में परिवारवाद भारत के औपनिवेशिक शासन से भी प्राचीन है। प्राचीन भारत में राज्य तथा साम्राज्य (Kingdoms and Empires) प्रायः शाही परिवारों (Royal Family) द्वारा शासित होते थे, जिसमें राजनीतिक शक्ति विरासत में मिलती थी। राजवंशीय राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा अनेक भारतीय राजवंशों जैसे मौर्य, गुप्त तथा चोल में आम थी। इन अवधियों में, राजत्व या शासन (Kingship) का विचार अक्सर राजवंशीय राजनीति में परिवारवाद के भीतर पारित किया जाता था, जिससे शासन की निरंतरता सुनिश्चित होती थी। ये राजवंशीय राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा आधुनिक मानकों के अनुसार लोकतांत्रिक नहीं थीं, अपितु प्राचीन भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन का एक अभिन्न अंग थीं।

मध्यकालीन भारतीय राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा प्रचलित थी, विशेष रूप से सामंती व्यवस्था के अंतर्गत, जिसमें सत्ता तथा संपत्ति राजाओं, महाराजाओं एवं जमींदारों के परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती थी। यह शक्ति एवं सत्ता राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा पर केन्द्रित था जिसके कारण राजनीतिक एवं सामाजिक निर्णय परिवार के भीतर ही लिए जाते थे। इस

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

काल में राजाओं, महाराजाओं तथा जमींदारों ने राजनीति में परिवारवादी शासन की अवधारणा को विकसित करते हुए समाज के विभिन्न वर्गों को नियंत्रित करके सामाजिक संरचना को मजबूत किया, जबकि आम लोगों की शक्ति को सीमित किया।

मध्यकालीन भारत में, क्षेत्रीय राजतंत्रों तथा मुस्लिम सल्तनतों ने भी राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा के तहत पारिवारिक नेतृत्व की परंपरा को बनाए रखा। शेरशाह सूरी तथा बाद के मुगल बादशाहों ने भी अपने–अपने साम्राज्यों में राजनीति में परिवारवादी शासन की अवधारणा के अंतर्गत राजनीति में परिवारवाद का उदाहरण प्रस्तुत किया। हिंदू तथा मुस्लिम दोनों शासनों में, परिवार अथवा शाही घराने (Family or Royal House) के भीतर राजनीतिक सत्ता का उत्तराधिकार शासन की एक केंद्रीय विशेषता थी, जोकि राजनीति में परिवारवाद को मूर्त रूप देती थी।

ब्रिटिश कालीन भारतः परिवारवादी राजनीति पर ब्रिटिश प्रभाव– भारतीय समाज में ब्रिटिश काल के दौरान, अंग्रेजों के आने से राजनीतिक माहौल में महत्वपूर्ण बदलाव आए, जिसमें राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा का उदय भी शामिल है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने पारंपरिक शासन प्रणालियों को नष्ट कर दिया, परन्तु इससे राजनीति में परिवारवादी शासन पूर्णतः समाप्त नहीं हुई बल्कि अंग्रेजों ने भारतीय अभिजात वर्ग तथा राजघरानों के साथ अनेक तरीकों से सहयोग करके मौजूदा सत्ता संरचनाओं को अनुकूलित किया। इससे राजनीति में परिवारवाद का एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ। जिसमें भारतीय सम्राट तथा क्षेत्रीय नेतृत्व, जैसे बंगाल के नवाब अथवा रियासतों के महाराजाओं ने ब्रिटिश निगरानी के बावजूद अपना प्रभाव बनाए रखा।

यद्यपि अंग्रेजों ने ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय समाज में अप्रत्यक्ष शासन प्रणालियाँ भी बनाईं जो औपनिवेशिक साम्राज्य की आवश्यकताओं के अनुकूल थीं। इस व्यवस्था में भी राजनीति में परिवारवाद को चरितार्थ किया जोकि देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार अभिजात वर्ग अथवा कुलीन वर्गों ने स्थानीय परिषदों में वंशानुगत पदों के साथ अथवा अंग्रेजों के सहयोगी के रूप में शासन प्रणाली में शामिल हो गए। यह प्रथा मुख्यतः उन क्षेत्रों तक ही सीमित थी जहां ब्रिटिश शासन अप्रत्यक्ष था तथा अनेक स्थानीय शासकों के परिवारों का प्रभाव जारी था।

स्वतंत्रता के पश्चात का भारतः राष्ट्रीय परिदृश्य की राजनीति में परिवारवाद का उदय– 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिलने के साथ ही देश की राजनीतिक संरचना 26 जनवरी, 1950 को एक लोकतांत्रिक गणराज्य में परिवर्तित हो गयी। जिसमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने वाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ–साथ अनेक क्रांतिकारियों, वकीलों, विभिन्न संगठनों, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों, लेखकों, युवाओं, महिलाओं, आम लोगों तथा पत्रकारों आदि ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नये राष्ट्र–राज्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्रता के पश्चात भी स्वतंत्र भारत के सबसे प्रतिष्ठित विचारकों, लेखकों तथा गतिशील व्यक्तित्वों (Dynamic Personality) में से एक थे।

जवाहरलाल नेहरू के आभा मंडल एवं नेतृत्व ने भारत में विकास की बुनियाद रखी तथा वर्तमान भारत को आकार दिया, जिसने समय के साथ उनके कार्यों एवं व्यक्तित्व के आधार पर राजनीति में परिवारवाद की अवधारणा को जन्म दिया, जिसे कालान्तर में नकारात्मक रूप से नेहरू परिवारवाद अथवा नेहरू–गांधी परिवारवाद (श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री संजय गांधी, श्री राजीव गांधी, श्रीमती सोनिया गांधी, श्री राहुल गांधी एवं श्रीमती प्रियंका गांधी आदि, भाजपा– श्रीमती मेनका गांधी एवं श्री वरुण गांधी आदि) कहा गया, जो कई दशकों से भारतीय राजनीति को प्रभावित कर रहें हैं तथा साथ ही राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को प्रेरित भी किया, जिसने राजनीति में परिवारवाद के लिए भी मंच तैयार किया।

यद्यपि उनकी पार्टी के भीतर उनके नेतृत्व को चुनौती दी गई, परन्तु राजनीति में परिवारवाद की उनकी विरासत ने उनकी स्थिति को और मजबूत कर दिया। पार्टी कार्यकर्ता अक्सर नेहरू की विचारधारा के उत्तराधिकारी के रूप में उनके पीछे एकजुट होते थे। नेहरू से लेकर राजीव गांधी तक सभी प्रधानमंत्रियों ने अपने कार्यकाल के दौरान देश के विकास एवं आधुनिकीकरण का प्रयास किया। इसीलिए आज भी लोग भारतीय राजनीति में नेहरू–गांधी परिवारवाद की भूमिका को नहीं भूले हैं, जिसका प्रभाव आज भी व्यापक (पहले की तुलना में वोट प्रतिशत में कमी आई) है तथा आज के आम चुनावों में भी (वोट पाने के लिए) अथवा गाहे–बगाहे विपक्षी राजनीतिक दल इन लोगों को किसी न किसी रूप में स्मरण कर ही लेते हैं, भले ही नकारात्मक तरीके से ही क्यों न हो?

भारतीय प्रान्तों में क्षेत्रीय वंशवाद तथा राजनीति में परिवारवाद– जहाँ नेहरू–गांधी की राजनीति में परिवारवाद राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर रही थी तथा समय के साथ ऐसा कर भी रही है, परन्तु कालान्तर में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों में भी राजनीति में परिवारवाद प्रस्फुटित होने लगी, जो अपनी इच्छानुसार भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की दशा एवं दिशा निर्धारित करने लगे। उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु तथा महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में छोटे–बड़े क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को प्रायः परिवारवाद के साथ–साथ रिश्तों एवं संपर्कों आदि के माध्यम से राजनीतिक नेतृत्व विरासत अथवा दान स्वरूप मिला है। ये छोटे–बड़े क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय राजनीतिक दल राजनीति में परिवारवाद का विरोध तो करते हैं परन्तु अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए इसे मुखौटे की तरह इस्तेमाल करते हैं और अपने रिश्तेदारों तथा निकट संबंधियों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित करते रहते हैं। यह क्षेत्रीय राजनीतिक दल या संगठन भारत के संघीय ढांचे का एक अनिवार्य घटक (Constituent) बन गए हैं, जहां नेतृत्व उत्तराधिकार के निर्धारण में राजनीति में परिवारवाद अक्सर पार्टी या संगठन की विचारधारा से अधिक मायने रखती है। आजकल इन दलों में राजनीति में परिवारवाद का प्रभाव इतना गहरा हो गया है कि ये परिवारवादी दल अपने कैरियर तथा भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी भी स्तर को पार कर रहे हैं तथा आम चुनाव या उपचुनाव की प्रक्रिया में पारिवारिक निष्ठा एवं स्थानीय पहचान को महत्व दे रहे हैं।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय राजनीति में परिवारवाद एक प्राचीन सामाजिक परंपरा है जिसने समय के साथ समाज, राजनीति एवं संस्कृति आदि को प्रभावित किया है। ऋग्वैदिक काल से लेकर आज तक की राजनीति में परिवारवाद ने भारतीय समाज को विभिन्न तरीकों से प्रभावित किया है। जहां ऋग्वेद में सकारात्मक दृष्टिकोण से परिवारवाद को केन्द्रीय स्थान दिया गया है तथा परिवार के मुखिया के नेतृत्व को समाज के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। "भारतीय राजनीति में परिवारवाद, जिसे आम बोल–चाल की भाषा में वंशवादी राजनीति भी कहा जाता है, की मजबूत ऐतिहासिक जड़ें पूर्व–औपनिवेशिक एवं औपनिवेशिक दोनों युगों में हैं, जिसने वर्तमान भारतीय राजनीति में परिवारवाद का बीजारोपण किया और कालांतर में जे.पी आंदोलन (संपूर्ण क्रांति आंदोलन/बिहार आंदोलन 1974– 1975) के पश्चात वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है"।

3. प्रमुख राजनीतिक दलों की राजनीति में परिवारवाद का उद्भव– भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की राजनीति में परिवारवाद का वट वृक्ष लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए गंभीर चुनौतियां पेश कर रहा है। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद से ही राजनीति में परिवारवाद भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की एक प्रमुख विशेषता रही है, जोकि आज भी सक्रिय है और इसका प्रभाव दिन–प्रति–दिन बढ़ता जा

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

रहा है। भारत के जन मानस में यह भावना भी व्याप्त हो गई है कि राजनीतिक सत्ता एवं भौतिक सुख प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह से चुनाव जीतना होगा, यही कारण है कि अनेक प्रशासनिक अधिकारी, व्यवसायी तथा गणमान्य व्यक्ति आदि राजनीतिक सत्ता हासिल करने एवं सत्तारूढ़ राजनीतिक दलों के साथ संबंध बनाए रखने में लगे हुए हैं। लोगों की यह धारणा राजनीति में परिवारवाद को जन्म दे रही है, जिसने आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीति में परिवारवाद को एक नया आयाम एवं बल प्रदान किया है, जहां एक ही परिवार के भीतर नेतृत्व का हस्तांतरण हो रहा है जोकि भारत के राजनीतिक ताने–बाने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा एवं विशेषता बन गयी है। इस प्रकार, प्रमुख राजनीतिक दलों में परिवारवाद के उद्भव के एक नहीं अपितु अनेक कारण (नाम तथा विरासत की पहचान, संसाधनों एवं नेटवर्क तक पहुंच, पार्टी के भीतर लोकतंत्र की कमी, मतदाता की मानसिकता एवं भावनात्मक लगाव, जाति तथा समुदाय आधारित राजनीति, राजनीतिक स्थिरता एवं निरंतरता, विकल्पों की कमी, सामाजिक–सांस्कृतिक कारण, चुनावी गणित और मीडिया एवं प्रचार में बढ़त आदि) हैं, जोकि हर राजनीतिक दल अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए उद्भव के इन कारणों का लाभ उठाता दिख रहा है। ये भारतीय राजनीतिक दल इस प्रकार हैं:

क. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी)– भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली कांग्रेस पार्टी भारतीय राजनीति में परिवारवाद का सबसे प्रमुख उदाहरणों में से एक रही है। जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी की विरासत ने पार्टी के भीतर सत्ता की केंद्रीय धुरी का गठन किया। राजीव गांधी की असामयिक मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी सोनिया गांधी पार्टी का चेहरा बनीं तथा कांग्रेस के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कांग्रेस का भारतीय राजनीति में परिवारवाद का बोलबाला है और सोनिया गांधी के पुत्र राहुल गांधी हाल के वर्षों में पार्टी के सबसे प्रमुख नेता के रूप में उभरे हैं। राहुल गांधी अपनी बहन प्रियंका गांधी वाड्रा के साथ देश के राजनीतिक विमर्श में शामिल नेहरू–गांधी भारतीय राजनीति में परिवारवाद की तीसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय राजनीति में कांग्रेस के भीतर गांधी परिवारवाद का प्रभुत्व अक्सर विवाद का विषय रहा है, आलोचकों का तर्क है कि यह लोकतंत्र एवं योग्यता के सिद्धांतों को कमजोर करता है।

ख. भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)– राजनीतिक शुचिता पर सर्वाधिक जोर देने वाली भाजपा भी राजनीति में परिवारवाद पर समान रूप से मकड़ जाल में फंसी हुई है। कांग्रेस की प्रतिद्वंद्वी मानी जाने वाली भाजपा में भी अनेक नेताओं (सभी के नाम यहां गिनाना संभव नहीं है) के बीच राजनीति में परिवारवाद खूब फल–फूल रही है। भाजपा का राष्ट्रवाद एवं वैचारिक जोर के कारण कांग्रेस की राज सत्तारूढ़ दल के साथ रहते हैं नीति में परिवारवाद कुछ हद तक कम हो गई है, क्योंकि भारतीय राजनीति में परिवारवाद के आधार पर जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले कांग्रेसी नेता (सत्तारूढ़ दल के साथ रहते हैं) अवसरवादी राजनीति का लाभ प्राप्त करने के लिए और अपनी विरासत को जीवित रखने के लिए भाजपा में शामिल हो गए हैं। यद्यपि भाजपा भी आज की भारतीय राजनीति में परिवारवाद का विरोध करने की आड़ में अपने बेटे–बेटियों एवं रिश्तेदारों को अपने व्यक्तिगत प्रभाव का इस्तेमाल करके कुछ आकर्षक तथा लाभप्रद पदों पर आरुण कर रहे हैं।

भाजपा की भारतीय राजनीति में परिवारवाद के बढ़ने का एक कारण भाजपा द्वारा ज्योतिरादित्य सिंधिया, पंकजा मुंडे, वसुंधरा राजे सिंधिया (विजयाराजे सिंधिया की बेटी जो दूसरी बार राजस्थान की मुख्यमंत्री बनीं), एक अन्य बहन यशोधरा राजे सिंधिया, जो शिवराज सिंह चौहान की कैबिनेट में मंत्री थीं तथा वसुंधरा राजे के बेटे दुष्यंत सिंह, जो कई वर्षों तक भाजपा के सांसद रहे आदि जैसे नेताओं के रिश्तेदारों को बढ़ावा देना है। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह के बेटे सांसद हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्व भाजपा मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के बेटे सांसद तथा उनके पोते विधायक हैं। सांसद रविशंकर प्रसाद के पिता ठाकुर प्रसाद भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक थे और उन्होंने बिहार राज्य मंत्रिमंडल में उद्योग विभाग भी संभाला था तथा 1977 में कर्पूरी ठाकुर के मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री भी थे। सांसद पीयूष गोयल के पिता राज्यसभा सदस्य वेद प्रकाश गोयल भी अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में कैबिनेट मंत्री थे। यशवंत सिन्हा वाजपेयी सरकार में वरिष्ठ मंत्री थे, जो जयंत सिन्हा के पिता हैं जो नरेंद्र मोदी कैबिनेट में मंत्री रह चुके हैं। वर्तमान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के बेटे पंकज सिंह भी उत्तर प्रदेश विधानसभा में विधायक हैं, कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई जिनके पिता एस.आर. बोम्मई (1988–89) कर्नाटक के मुख्यमंत्री थे, पूर्व सांसद पूनम महाजन भाजपा नेता प्रमोद महाजन की पुत्री, दिल्ली के सांसद प्रवेश वर्मा पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के पुत्र, असम के नेता अपूर्व महंत पूर्व केंद्रीय मंत्री महंत शंकरदेव के परिवार से, कर्नाटक के सांसद राघवेंद्र सिंह पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. येदियुरप्पा के पुत्र, सांसद बांसुरी स्वराज पूर्व केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज की पुत्री तथा सांसद अनुराग ठाकुर के पिता प्रेम कुमार धूमल हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री रह चुके हैं आदि ऐसे अनेक उदाहरण हैं (यहां नाम गिनाना संभव नहीं है) भाजपा नेताओं ने भारतीय राजनीति में परिवारवाद की बुनियाद पर अपनी विरासत संभाल रखी है और अपने प्रभाव व रसूख से जनता को प्रभावित करते हुए सत्ता के सुखों का आनंद ले रहे हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अन्य राजनीतिक दलों की तुलना में भाजपा में शीर्ष नेतृत्व अंशतः भारतीय राजनीति में परिवारवाद पर आधारित है, पूर्णतः नहीं और न ही यह दल किसी व्यक्ति या जाति से पहचानी जाती है। इस दल में शीर्ष नेतृत्व देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होता रहता है (अटल बिहारी वाजपेयी, लाल कृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती, सुषमा स्वराज, नितिन गडकरी, प्रमोद महाजन, नरेन्द्र दामोदर दास मोदी, योगी आदित्यनाथ, जगत प्रकाश नड्डा, शिवराज सिंह चौहान आदि के साथ–साथ अमित शाह भी भाजपा के ऐसे शीर्ष नेतृत्व आदि शामिल थे एवं हैं) और इससे पार्टी पर भी कोई असर नहीं पड़ता, जबकि कांग्रेस सहित अन्य क्षेत्रीय राजनीतिक दलों में शीर्ष नेतृत्व भारतीय राजनीति में परिवारवाद पर आधारित है तथा दल अथवा संगठन की पहचान भी इसी व्यक्ति अथवा जाति से होती है जो दीर्घकालिक होती है। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी में शीर्ष नेतृत्व के व्यक्तित्व का प्रभाव दल में एक निश्चित अवधि तक ही रहता है, दीर्घकाल तक नहीं, क्योंकि अन्य राजनीतिक दलों एवं संगठनों की तुलना में भाजपा संगठनात्मक पदानुक्रम को प्राथमिकता देती है। इसके बावजूद भी भारतीय जनता पार्टी के कुछ क्षेत्रों/प्रांतों एवं नेतृत्व मंडलियों (Circles) का भारतीय राजनीति में परिवारवाद का प्रभाव बना हुआ है, जिसका ये लोग खुलकर लाभ उठा रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ, अरविंद केजरीवाल तथा आम आदमी पार्टी (राष्ट्रीय पार्टी) एक दूसरे के पूरक हैं अर्थात दोनों एक दूसरे को पूर्ण करते हैं और जब एक साथ आते हैं तो एक पूर्ण संगठन अथवा पार्टी बन जाते हैं।

ग. क्षेत्रीय राजनीतिक दल तथा राजनीति में परिवारवाद– भारत के विभिन्न प्रान्तों में राज्य–विशिष्ट मुद्दों, संस्कृति, भाषा, सांप्रदायिकता, जाति अथवा सामाजिक स्थितियों आदि के आधार पर अपने स्वयं के क्षेत्रीय दल अथवा संगठन हैं, जो क्षेत्रीय राजनीतिक दलों अथवा संगठनों ने भारतीय राजनीति में परिवारवाद को जन्म दिया है। 21वीं सदी में भारत का राजनीतिक क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है तथा भारतीय राजनीति में परिवारवाद केवल राष्ट्रीय दलों तक ही सीमित नहीं है अपितु समाजवादी पार्टी (सपा),

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

राष्ट्रीय जनता दल (राजद), तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस), शिवसेना, अकाली दल तथा बहुजन समाज पार्टी (बसपा) जैसी अनेक छोटी–बड़ी राजनीतिक पार्टियां परिवार, जाति और व्यक्ति आदि के आधार पर नेतृत्व के उदय की सशक्त पहचान एवं प्रतीक हैं। अर्थात एक सिक्के के दो पहलू हैं, जो इस प्रकार हैं:

1. **समाजवादी पार्टी (सपा):** क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उदय एवं भारतीय राजनीति में परिवारवाद के परिप्रेक्ष्य में लोहियावादी विचारधारा के समर्थक चौधरी चरण सिंह के शिष्य मुलायम सिंह यादव ने गांधी–नेहरू की भारतीय राजनीति में परिवारवाद के विरुद्ध संघर्ष करते हुए समाजवादी पार्टी का गठन किया और राजनीतिक उत्तराधिकार अपने बेटे को सौंपा। इतना ही नहीं, जब मुलायम सिंह यादव, अखिलेश यादव को राजपथ पर लेकर आ रहे थे, तब छोटे लोहिया जनेश्वर मिश्र साइकिल रैली को हरी झंडी दिखा रहे थे। यह वही 'छोटे लोहिया' थे जो नेहरू–गांधी पर भारतीय राजनीति में परिवारवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाने का कोई मौका नहीं छोड़ते थे। मुलायम सिंह यादव द्वारा स्थापित सपा का नेतृत्व मुख्य रूप से उनका परिवार, विशेषकर उनके बेटे अखिलेश यादव कर रहे हैं तथा मुलायम परिवार का पार्टी पर दबदबा भी कायम है, जबकि उनके परिवार को प्रतिद्वंद्वी गुटों से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि समाजवादी पार्टी एवं मुलायम सिंह यादव का परिवार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं अर्थात एक के अभाव में दूसरे की परिकल्पना नहीं की जा सकती।

2. राष्ट्रीय जनता दल (राजद): राष्ट्रीय जनता दल (श्रेयः नेशनल पीपुल्स पार्टी) बिहार, झारखंड और केरल राज्यों में स्थित एक भारतीय राजनीतिक दल है। इस पार्टी की स्थापना 5 जुलाई 1997 को जगदानंद सिंह तथा लालू प्रसाद यादव ने अपने समर्थकों (सत्रह लोकसभा सांसदों एवं आठ राज्यसभा सांसदों) के साथ मिलकर एक नई राजनीतिक पार्टी राष्ट्रीय जनता दल बनाने के लिए की थी। इसका गठन नई दिल्ली में जनता दल से अलग होकर किया गया था तथा लालू प्रसाद को राजद का पहला अध्यक्ष चुना गया था। साथ ही इस राजनीतिक दल का नारा है "समाज का बल, राष्ट्रीय जनता दल" "बिहार का विश्वास, लालटेन का प्रकाश"।

कर्पूरी ठाकुर एवं जयप्रकाश नारायण के सबसे प्रतिभाशाली शिष्य लालू प्रसाद यादव ने सामाजिक न्याय की सबसे बड़ी जिम्मेदारी अपने ही परिवार को दी और भारतीय राजनीति में परिवारवाद की आधारशिला रखी। उन्होंने अपनी पत्नी को मुख्यमंत्री, अपने छोटे बेटे को उपमुख्यमंत्री, अपने बड़े बेटे को मंत्री तथा अपनी बड़ी बेटी को राज्यसभा में जगह दिलाई। लालू प्रसाद यादव की पार्टी आरजेडी लंबे समय से भारतीय राजनीति में परिवारवाद से जुड़ी रही है, जिसमें लालू के बेटे तेज प्रताप यादव एवं तेजस्वी यादव राज्य की राजनीति में अहम भूमिका निभाते हैं।

3. तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी): अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस, जिसे एआईटीसी, टीएमसी अथवा तृणमूल कांग्रेस के नाम से भी जाना जाता है, पश्चिम बंगाल में स्थित एक भारतीय राजनीतिक दल है, जो मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल प्रान्त में सक्रिय है। 01 जनवरी, 1998 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पृथक होकर गठित इस दल का नेतृत्व इसकी संस्थापक एवं पश्चिम बंगाल की वर्तमान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी करती हैं। यद्यपि वे आज भी अपनी ज़मीनी सक्रियता के लिए जानी जाती हैं, परन्तु इसके बावजूद भारतीय राजनीति में परिवारवाद के कारण, उनके नाथ तथा रिश्तेदार दल के कामकाज में अत्यधिक प्रभावशाली हैं।

4. शिवसेना: शिवसेना (1966–2022) शिवसेना का शाब्दिक अर्थ है, 'शिवाजी की सेना' जिसे संक्षिप्त रूप में एस.एस. भी कहा जाता है जो प्रारंभ में एक गैर–राजनीतिक संगठन था। जिसकी स्थापना 19 जून 1966 को प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट बाला साहेब ठाकरे ने की थी। इस संगठन को तत्कालीन मुख्यमंत्री वसंतराव नाइक का संरक्षण प्राप्त था, जिन्होंने इसका इस्तेमाल ट्रेड यूनियनों पर अंकुश लगाने तथा कांग्रेस पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए किया था। कालांतर में यह भारत में एक दक्षिणपंथी मराठी क्षेत्रवादी हिंदुत्व–आधारित राजनीतिक दल के रूप में उभरा तथा कांग्रेस की भारतीय राजनीति में परिवारवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने के इर्द–गिर्द अपनी राजनीतिक पृष्ठभूमि तैयार की।

बालासाहेब ठाकरे द्वारा स्थापित शिवसेना पूरी तरह से उनके पारिवारिक नियंत्रण में रही है। बालासाहेब ठाकरे ने अपने जीवनकाल में ही शिवसेना की कमान अपने बेटे उद्धव ठाकरे को सौंप दी थी तथा उनकी मृत्यु के पश्चात उद्धव ठाकरे ने इसका नेतृत्व संभाला तदोपरान्त युवा शाखा की कमान अपने बेटे आदित्य ठाकरे को सौंप दिया। शिवसेना की परिवार–केंद्रित नेतृत्व की राजनीति इसकी पहचान, प्रतीक, गौरव एवं इसकी राजनीतिक रणनीतियों का पर्याय है। बाद के वर्षों में, पार्टी दो गुटों में विभाजित हो गई: उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे), जिसने मशाल का नया प्रतीक अपनाया, जबकि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली दूसरी शिवसेना (2022–वर्तमान) ने "धनुष और तीर" प्रतीक के साथ मूल पार्टी का नाम बरकरार रखा।

5. अन्य क्षेत्रीय राजनीतिक दल: इन सबके अतिरिक्त भारतीय राजनीति में ब्लॉक, जिला, संभाग एवं प्रांतीय स्तर (पंजीकृत तथा अपंजीकृत) पर अनेक राजनीतिक दल अथवा संगठन हैं जिनका नेतृत्व भारतीय राजनीति में परिवारवाद पर केंद्रित है तथा इसके माध्यम से वे अपने राजनीतिक जीवन की दशा एवं दिशा तय करते हैं (परिवार के सदस्य ही तय करते हैं कि उनकी पार्टी या संगठन के चुनाव चिन्ह पर कौन चुनाव लड़ेगा तथा अन्य राजनीतिक गतिविधियां आदि)। जिसमें सत्ता एवं निर्णय लेने का अधिकार परिवार के हाथों में निहित होता है उदाहरणार्थ: राष्ट्रीय लोकदल (आरएलडी) में चौधरी चरण सिंह के बेटे अजित सिंह तथा अजित सिंह के बेटे जयंत चौधरी का पूर्णाधिकार, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) में मायावती तथा उनके भाई आनंद कुमार का वर्चस्व, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) में करुणानिधि परिवार का एकाधिकार, तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति (भारतीय राष्ट्रीय परिषद: बीआरएस), जिसे पहले तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) के नाम से जाना जाता था पर, के. चंद्रशेखर राव तथा उनके परिवार का एकाधिकार, तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी: तेलुगु भूमि की पार्टी) पर एन चंद्रबाबू नायडू के बेटे नारा लोकेश का सर्वाधिकार, शिरोमणि अकाली दल में प्रकाश सिंह बादल के पुत्र सुखबीर सिंह बादल का सर्वाधिकार, बीजू जनता दल (बीजेडी) में बीजू पटनायक के बेटे नवीन पटनायक का पूर्णाधिकार, लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) में रामविलास पासवान के पुत्र चिराग पासवान का पूर्ण वर्चस्व, जनता दल (सेक्युलर) जेडीएस पर एच.डी देवेगौड़ा एवं उनके परिवार का एकाधिकार, हिंदुस्तान आवाम मोर्चा (हम) में जीतन राम मांझी के पुत्र डॉ. संतोष कुमार सुमन मांझी का पूर्णाधिकार तथा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) में शरद पवार एवं उनके परिवार का वर्चस्व आदि ऐसे अनेक राजनीतिक दल है जो भारतीय राजनीति में परिवारवाद के आधार पर भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की दशा एवं दिशा निर्धारित कर रहे हैं। जो भी हो, भारतीय राजनीति में वामपंथी दलों को छोड़कर सभी दलों ने भारतीय राजनीति में परिवारवाद को बढ़ावा दिया है ऐसा नहीं है कि वामपंथी दलों ने उनके परिवार के सदस्यों की मदद नहीं किया, बल्कि ज्यादातर मामलों में उनकी मदद उनके परिवार के सदस्यों को छात्रवृत्ति प्रदान करके सोवियत संघ (विदेश) भेजने तक ही सीमित थी। इस प्रकार भारतीय राजनीति में सभी

प्रकार के छोटे–बड़े एवं क्षेत्रीय दलों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिनका नेतृत्व अधिकांशतः परिवारवाद पर आधारित होता है, जिसके कारण इन दलों की नीतियां एवं कार्यशैली प्रायः पारिवारिक तथा स्थानीय मुद्दों पर आधारित होती हैं।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि इन नेतृत्वकर्ताओं तथा राजनीतिक दलों के अतिरिक्त भी कुछ महान नेतृत्वकर्ता हुए हैं। इसमें कोई अपवाद नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन चाहने वाले अनेक राजनीतिक दलों में हमेशा से यह परंपरा रही है कि वे अपनी राजनीतिक विरासत ऐसे लोगों को सौंपते हैं जिनका उनके परिवार, धर्म, संप्रदाय तथा जाति से कोई संबंध नहीं होता (यहां सभी का नाम लेना संभव नहीं है)। उदाहरणार्थ जब जनता पार्टी ने भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर के साथ उनके बड़े बेटे रामनाथ ठाकुर को भी टिकट दिया तो कर्पूरी ठाकुर ने यह कहते हुए अपना नाम सूची से वापस ले लिया कि "एक परिवार से एक ही व्यक्ति रहेगा, यदि पार्टी को मेरे बेटे में इतनी राजनीतिक प्रतिभा दिखती है तो मैं अपना नाम वापस ले लूंगा"।

4. 21वीं सदी में भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति पर परिवारवाद के निहितार्थ एवं प्रभाव– 21वीं सदी में भारतीय राजनीति में परिवारवाद करने वाले नेताओं की संख्या, प्रभाव तथा निहितार्थ दिन–प्रति–दिन बढ़ते जा रहे हैं। जिस प्रकार आजादी से पूर्व रियासतें थीं, उसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में राजनीतिक वंशों (च्वसपजपबंस कलदेंजपमे) का उदय भी देखा जा रहा है, ऐसा लगता है कि कुछ बड़े नेता अपनी राजनीतिक गद्दी अपने बेटे अथवा बेटी को सौंप रहे हैं। इसमें राजनीतिक दल एक पारिवारिक दल में परिवर्तित हो जाता है एवं सत्ता बंट जाती है। जब इस में असंतोष पैदा होता है तो दल भी उसी तरह विघटित हो जाती है जैसे परिवार विघटित हो जाता है। यह एक अजीबोगरीब परिवर्तन है जो लोकतंत्र की मूल प्रकृति एवं चरित्र के विरुद्ध है। इस प्रकार 21वीं सदी में भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति में परिवारवाद के प्रभाव एवं निहितार्थ को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत देखा जा सकता हैः

1. सत्ता का केंद्रीकरणः 21वीं सदी में भारतीय लोकतंत्र की राजनीति में परिवारवाद का प्रभाव सत्ता के केंद्रीकरण के रूप में दिखाई पड़ रहा है। कुछ परिवारों के भीतर सत्ता का केंद्रीकरण न केवल नए राजनीतिक नेतृत्व के उभरने के अवसरों को सीमित कर रहा है, बल्कि राजनीतिक नियंत्रण को भी केंद्रीकृत कर रहा है, जो पिछले कुछ दशकों में अक्सर देखा गया है क्योंकि नेतृत्व योग्यता के बजाय व्यक्तिगत वफादारी पर अधिक निर्भर हो गया है, जिससे सभी नागरिकों के लिए समान अवसर के लोकतांत्रिक सिद्धांत को कमजोर किया जा रहा है।

2. योग्यता बनाम राजनीति में परिवारवादः आज भारतीय लोकतंत्र में परिवारवाद का प्रभाव योग्यता बनाम राजनीति में परिवारवाद के रूप में भी दिखाई पड़ रहा है, जिसके कारण प्रायः ऐसी स्थिति उत्पन्न होती जा रही है जहां राजनीतिक नेतृत्व योग्यता के बजाय जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में निर्धारित हो रहें हैं। इससे संरक्षण की एक ऐसी प्रणाली बन रही है जिसमें केवल कुछ ही परिवारों के पास सत्ता तक पहुंच होती है। इनका मुख्य उद्देश्य भारतीय राजनीति में परिवारवाद के माध्यम से अपने तथा अपने करीबी रिश्तेदारों के लिए अधिकतम लाभ प्राप्त करना और यह सुनिश्चित करना कि वे सत्ता में बने रहें, चाहे सरकार की विचारधारा कुछ भी हो। ऐसा नेतृत्व लोगों के कल्याण पर कम, पारिवारिक हितों को प्राथमिकता अधिक दे रहें हैं, जोकि लोकतांत्रिक संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं को कमजोर कर सकता है।

3. राजनीतिक भागीदारी की चुनौतियाँः आज के संदर्भ में, भारतीय राजनीति में परिवारवाद के प्रभाव एवं निहितार्थों ने नई राजनीतिक आवाज़ों एवं नेतृत्व को उभरने में कठिन बना दिया है, क्योंकि पिछले कुछ दशकों में भारतीय राजनीति में कुछ परिवारों के प्रभुत्व ने गैर–राजनीतिक पृष्ठभूमि या छोटे समुदायों से आने वाले महत्वाकांक्षी युवा नेताओं के लिए राजनीतिक भागीदारी में चुनौतियों को जन्म दिया है, जिन्हें अक्सर इस स्थापित पदानुक्रम से बाहर निकलने में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण राजनीतिक व्यवस्था में असमानता पैदा हो रही है व अधिक समावेशी राजनीतिक भागीदारी की गुंजाइश सीमित होती जा रहीहै।

4. राजनीति में परिवारवाद एवं शासनः 21वीं सदी में भारतीय राजनीति में परिवारवाद का प्रभाव यह है कि सत्ता पर परिवारवाद की पकड़ बहुत मजबूत होता जा रहा है, जिसके कारण अकुशलता, भ्रष्टाचार एवं भाई–भतीजावाद का जोखिम बढ़ रहा है, जिससे राजनीतिक व्यवस्था में जनता का विश्वास कम होता जा रहा है क्योंकि लोग राजनीतिक दल को सार्वजनिक सेवा के साधन के बजाय एक परिवार के स्वामित्व वाले उद्यम के रूप में देख रहे हैं। इसका निहितार्थ यह है कि भारतीय राजनीति में परिवारवाद के जारी रहने से शासन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई पड़ रहा है।

5. राजनीतिक जवाबदेही पर प्रभावः भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की राजनीति में परिवारवाद का प्रभाव राजनीतिक जवाबदेही पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है, जिसके कारण राजनीति में जवाबदेही अक्सर गौण होती जा रही है, क्योंकि नेतृत्व लोकतांत्रिक विकल्प के बजाय जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र, वर्ग, वर्ण एवं पारिवारिक संबंधों आदि पर आधारित हो रहे हैं। इसका निहितार्थ यह है कि इन राजनीतिक नेताओं को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जा रहा है, जिसके कारण उनमें अधिकार की भावना पैदा हो रही है तथा शासन में पारदर्शिता का अभाव दिखाई पड़ रहा है।

5. समकालीन भारतीय राजनीतिक दलः परिवारवाद से ओत–प्रोत– भारतीय राजनीति में परिवारवाद अनेक प्रमुख भारतीय राजनीतिक दलों की पहचान (प्कमदजपपिबंजपवद) बन गई है, जिसमें एक ही परिवार के भीतर कई पीढ़ियों के बीच राजनीतिक सत्ता का हस्तांतरण हो रहा है, जिसके कारण लोकतांत्रिक प्रक्रिया कमजोर हो रही है तथा राजनीतिक नवाचार (Innovation) बाधित हो रहा है। इसके बावजूद, कई लोगों ने मुझे यह तर्क दिया है कि "भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की राजनीति में परिवारवाद ने स्थिरता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, क्योंकि राजनीतिक परिवार, विशेष रूप से क्षेत्रीय दल, निरंतरता एवं स्थिरता की भावना प्रदान करते हैं और साथ ही ये परिवार प्रायः लोगों के साथ अपने दीर्घकालिक संबंधों के कारण अपने क्षेत्र के कल्याण में गहराई से निवेश करते हैं"। इन तर्कों ने मुझे यह विचार करने के लिए प्रेरित किया है कि समकालीन भारतीय राजनीतिक दल राजनीति में परिवारवाद से क्यों प्रभावित अथवा ओत–प्रोत हैं, जिसे मैंने निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित किया हैः

1. राजनीतिक निरंतरता एवं स्थिरताः मैंने अक्सर देखा है कि जिन प्रन्तों की राजनीति में परिवारवाद मजबूत है, वहां की राजनीति में परिवारवाद अक्सर राजनीतिक निरंतरता एवं स्थिरता की भावना प्रदान करने का प्रयास करते हैं, साथ ही राजनीतिक उथल–पुथल से सावधान रहते हैं और ऐसी लोक–लुभावन योजनाओं की घोषणा करते हैं, जो मतदाताओं को आकर्षित कर सकें। यही कारण है कि प्रान्तों की राजनीति में परिवारवाद के नेतृत्व को अक्सर किसी क्षेत्र की राजनीतिक परंपराओं एवं मूल्यों के संरक्षक के रूप में देखा जा रहा है।

2. अनुभव तथा विरासतः समकालीन भारतीय राजनीतिक दलों में, देश, काल एवं परिस्थितियों के आधार पर, यह देखा गया है कि किसी भी राजनीतिक परिवार के सदस्यों को पिछली पीढ़ियों द्वारा विकसित की गई रणनीतियां एवं राजनीतिक कौशल विरासत में

मिलते हैं। उनके पास पहले से ही राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त, अनुभव तथा निरंतरता है, जो उन्हें प्रभावी शासन में अपनी भूमिका निभाने में एक महत्वपूर्ण शक्ति बनाती है। यही कारण है कि ये राजनीतिक दल परिवारवाद से पूर्णतः ओत–प्रोत होती हैं।

3. लोकप्रिय समर्थनः इनमें से कई राजनीतिक परिवारों को दशकों से जमीनी स्तर पर मजबूत समर्थन मिला है तथा आज भी मिल रहें हैं। वे अक्सर जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र तथा समुदाय आदि जैसी स्थानीय पहचानों के आधार पर राजनीति करते हैं। मतदाताओं में इस राजनीतिक परिवार के प्रति भगवान जैसी आस्था, अंधभक्ति, विश्वास एवं निष्ठा होती है, अर्थात अंधभक्तों के लिए इन दलों के प्रति जीवन–मरण एवं प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है। यही कारण है कि समकालीन भारतीय राजनीतिक दल परिवारवाद से ओत–प्रोत है

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि समकालीन भारतीय राजनीति में परिवारवाद लोकतांत्रिक गणराज्य के समक्ष एक बड़ी चुनौती बन कर उभरी है, जो धीरे–धीरे लोकतांत्रिक गणराज्य की प्रक्रियाओं को दीमक की तरह नष्ट कर रहे हैं और राजनीतिक उत्तरदायित्व को भी कम कर रहे हैं। भारत को एक सच्चे समावेशी एवं लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में विकसित करने के लिए राजनीतिक दलों के साथ–साथ जागरूक मतदाताओं को भी जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र, धन–बल, बाहुबल एवं अंधभक्ति आदि को दरकिनार कर मानवता तथा नैतिक उत्तरदायित्व की पृष्ठभूमि पर योग्यता आधारित नेतृत्व विकसित करके निर्णय लेने के आधार को व्यापक बनाने एवं राजनीति में परिवारवाद के प्रभाव को कम करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

6. निष्कर्ष– नव–उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के काल में भी भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की राजनीति में परिवारवाद एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गयी है, जिसने राजनीतिक परिदृश्य की रूपरेखा को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया है, जहाँ भारतीय राजनीति में परिवारवाद लोकतांत्रिक भागीदारी एवं उत्तरदायित्व को सीमित करता है और असमानता को बनाए रखती है, वहीं कुछ क्षेत्रों में निरंतरता एवं स्थिरता भी प्रदान करती है। भारत जैसे–जैसे राजनीतिक रूप से विकसित होगा, यह संभावना है कि भारतीय राजनीति में परिवारवाद की प्रभावशीलता बनी रहेगी, यद्यपि इसे आधुनिक राजनीतिक नेतृत्व, जागरूक मतदाताओं, शिक्षा के प्रसार, प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव आदि से प्रेरित नवीन और आधुनिक विचारधाराओं से चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

वर्तमान समय में भारतीय राजनीति में परिवारवाद का भविष्य भारतीय समाज की बदलती गतिशीलता, लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती, अधिक पारदर्शिता, सहभागिता तथा उत्तरदायित्व की मांग आदि पर निर्भर करेगा क्योंकि देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार भारतीय नागरिकों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है। (अपने अधिकारों के लिए जमीनी स्तर पर आंदोलनों का उदय, सोशल मीडिया की बढ़ती भूमिका, शिक्षित युवा नेतृत्व, शिक्षित जागरूक मतदाता, गैर–पारिवारिक राजनीतिक नेतृत्व, नव–उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का प्रभाव आदि), जोकि भारतीय राजनीति में परिवारवाद का दम भरने वाले राजनीतिक दलों के लिए समस्याएँ पैदा कर सकता है, परन्तु भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की राजनीति में परिवारवाद गहराई से समाई हुई है और निकट भविष्य में इसके समाप्त होने की संभावना नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, उपिंदर; प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, प्रकाशनः पीयर्सन एजुकेशन, नई दिल्ली, 2009.
2. चंद्र, सतीश; मध्यकालीन भारतः इतिहास और संस्कृति, ISBN 978–81–250–0806–0, प्रकाशनः ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, 1990, पृष्ठ 57,76,118 तथा 162.
3. चंद्र, बिपिन; आधुनिक भारत का इतिहास, ISBN 978–81–237–2310–8, प्रकाशनः नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2009
4. शर्मा,आर.एस.; प्राचीन भारत का इतिहास, ISBN 978–81–237–1939–2, प्रकाशनः नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2007, मौर्य एवं गुप्त काल के राजनीतिक अध्याय, पृ.170–195 / 260–285
5. चंद्र, बिपिन, मुखर्जी, मृदुला, मुखर्जी, आदित्य; भारत का स्वतंत्रता संग्राम, ISBN 978–0–14–010781–4, प्रकाशनः पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 1989, पृष्ठ 356–373.
6. शर्मा, डॉ.रामशरण; प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार, प्रकाशकः नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1996, ISBN : 978–8123700405, पृष्ठ 22–55.
7. रावत, हरीकृष्ण; समाजशास्त्र विश्वकोश, प्रकाशकः रावत पब्लिकेशन्सः 1998, ISBN : 978–8170334484.
8. गुप्ता, प्रो. एम. एल. एल तथा शर्मा डॉ. डी.डी; समाजशास्त्र, प्रकाशकः साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2023.
9. अग्रवाल, डॉ. विमल; समाजशास्त्र, प्रकाशकः साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2018, ISBN : 9388117581
10. सिंह, डॉ. रघुवीर; प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन, प्रकाशकः साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2001 ISBN : 978–8171004336
11. सिंह, डॉ. शिवकुमार; प्राचीन भारत का राजनीतिक और प्रशासनिक विचार, प्रकाशकः कल्पना प्रकाशन, 2015, ISBN : 978–9351282643.
12. प्रसाद, डॉ. रामेश्वर; प्राचीन भारतीय एवं पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन, ISBN : 978–81–203–4567–8, प्रकाशकः प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, 2010.
13. शर्मा, डॉ. सुमन; भारतीय और पाश्चात्य राजनीतिक विचारः एक तुलनात्मक अध्ययन ISBN : 978–93–5004–789–2, प्रकाशकः साहित्य भवन, 2015.
14. सिंह, प्रो. अरुण कुमार; राजनीतिक विचारधाराओं का विकासः भारतीय और पाश्चात्य संदर्भ, ISBN : 978–81–7169–987–3, प्रकाशकः किटाब महल लखनऊ, 2012.
15. गुप्ता, डॉ. मीना; प्राचीन और आधुनिक राजनीतिक विचारः एक समग्र दृष्टि, ISBN : 978–93–81428–45–6, प्रकाशकः अभिनव प्रकाशन, जयपुर, 2018.
16. मिश्रा, प्रो. राजेश; राजनीतिक चिंतनः भारतीय और पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य, ISBN : 978–81–272–0965–4, प्रकाशकः वाणी प्रकाशन वाराणसी, 2020.
17. सांगवान, दयानंद; भारतीय राजनीति और वंशवाद, ISBN : 9789391109042, प्रकाशकः द रीडर्स पैराडाइज, 2021.
18. सिंह, डॉ. रामजी; भारतीय राजनीति और शासन, ISBN : 978–8125004229, प्रकाशकः ओरिएंट ब्लैकस्वान हैदराबाद, 1970.
19. महेश्वरी, डॉ. एस. आर; आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ, ISBN : 978–8125908374, प्रकाशकः लक्ष्मी पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 2000.

20. कुमार, डॉ. सुरेश; भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका, ISBN : 978–8178354561, प्रकाशकः कल्पज पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2003.
21. महेश्वरी, डॉ. एस. आर; भारतीय राजनीति और शासन, ISBN : 978–8125004229, प्रकाशकः ओरिएंट ब्लैकस्वान हैदराबाद, 1970.
22. Cheal, David(Family) Critical Concepts in Sociology, Publisher: Routledge Publication, 2003 (4thVol.), ISBN: 978–0415251074.
23. Chambers, Deborah (Sociology of Family Life: Change and Diversity in Intimate Relationships, Publisher: Polity Press Publication, 2021 (2nd Edition), ISBN: 978–1509541372.
24. .Vanhanen, Tatu (Politics of Ethnic Nepotism: India as an Example, ISBN : 978-8120711766, Publisher: Sterling Publishers Pvt- Ltd- New Delhi, 1991.
25. Vaishnav, Milan (When Crime Pays: Money and Muscle in Indian Politics, ISBN: 978-0300216202, Publisher: Yale University Press New Haven, USA, 2017.
26. Bellow, Adam (In Praise of Nepotism: A Natural History, ISBN: 978-0385502726, Publisher: Doubleday New York, USA, 2003.
27. Smith, John (Family First: Nepotism's Hidden Hand in Politics, ISBN: 978-1998557430, Publisher: Global Insights Publishing London, UK, 2022.
28. Khanderao, Dr. Ganesh,Deosthale, Dr. Sanjay & Bhagat, Dr. Manoj (Nepotism in Indian Democracy, ISBN: 978&9355353758] Publisher% Scholars* Press Hyderabad] India] 2021-
29. Chandra] Kanchan(Democratic Dynasties% State] Party and Family in Contemporary Indian Politics] ISBN% 978-1107083233, Publisher: Cambridge University Press Cambridge, UK, 2016.
30. Kamal, K. L (Dynastic Politics in India, ISBN: 978-8178354561, Publisher: Kalpaz Publications Delhi, India, 2003.
31. Maheshwari, S. R (The Indian Political System, ISBN: 978-8125908376, Publisher: Laxmi Publications, New Delhi, India, 2000.
32. Gupta, R. K (Corruption and Cronyism in India, ISBN: 978-8178351232, Publisher: Kalpaz Publications Delhi, India, 2001.
33. Tiwari, V. K (Political Corruption in India: An Analysis, ISBN: 978-8171004562, Publisher: Mittal Publications New Delhi, India,1996.
34. सिंह, पंकज; लोकतंत्र का नया राजतंत्र, प्रकाशकः नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली भारत, वर्षः 2024.
35. जोशी, सत्यजीत; परिवारवाद की राजनीति दांव पर, प्रकाशकः पाञ्चजन्य, नई दिल्ली भारत, वर्षः 2024.
36. वेबदुनिया हिंदी; दक्षिण से उत्तर भारत तक राजनीति में हावी परिवारवाद की पूरी पड़ताल, वर्षः गुरुवार, 15 दिसंबर, 2022 (18:30 IST), hindi.webdunia.com.
37. विकिपीडिया, दैनिक समाचार पत्र, पत्रिकाएँ (हिंदी एवं अंग्रेजी) तथा अन्य स्रोत।

*****